E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(4): 45-49
Received: 15-02-2023
Accepted: 21-04-2023

प्रदीप कुमार मिश्रा
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. रंजना तिवारी
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, श्रीयुत्त स्नातकोत्तर कालेज, गंगेव, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
प्रदीप कुमार मिश्रा
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन का अध्ययन

प्रदीप कुमार मिश्रा, डॉ. रंजना तिवारी

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i4a.976

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन का अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श के रूप में चयनित सतना जिले के सभी विकासखण्डों से 6–6 विद्यालय कुल 48 विद्यालयों, विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 80 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 2–2 अभिभावक कुल 80 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। शोध क्षेत्र के 95.00 प्रतिशत प्राचार्य, 66.25 प्रतिशत अभिभावक, 8250 प्रतिशत शिक्षक व 74.88 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप नामांकन दर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

कुटशब्दः सतना जिला, माध्यमिक स्तर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020, क्रियान्वयन

1. प्रस्तावना
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 भारतीय शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए और शिक्षा व्यवस्था को समाज की आवश्यकताओं के अनुसार बनाने के लिए बनाई गई थी। जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 के दोषों को दूर करना तथा भारतीय शिक्षा संरचना को और अधिक दुरस्त करना था।
राजीव गांधी ने कहा था, कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (New Education Policy) 1986 सभी के लिए समान रूप से लाभकारी सिद्ध होगी।
उस समय के मानव संसाधन और विकास मंत्री श्री पी. वी. नरसिम्हा राव ने अगस्त 1986 में संसद में एक परिपत्र क्रियान्वित कार्यक्रम प्रस्तुत कर दिया तथा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 पर अमल किया और उसे प्रारंभ कर दिया।
उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। सुखी जीवन जीने के लिए तैयार होने के लिए एक बच्चे के विकास में शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण तत्व है। 21वीं सदी में 1986 के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बदलाव जुलाई 2020 में हुआ और यह नई शिक्षा नीति 2020 के रूप में सामने आई।
प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति द्वारा 01 अप्रैल, 2018 से 31 मार्च, 2020 के लिये नई एकीकृत शिक्षा योजना बनाने के स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है। प्रस्तावित योजना में, सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए.), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए) और शिक्षक शिक्षण अभियान को समाहित कर दिया गया है।

2. अध्ययन की आवश्यकताः
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल सतना जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। शिक्षा के संबंध में गांधी जी का तात्पर्य बालक और मनुश्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है। इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद का कहना था कि मनुष्य की अंर्तनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। 1986 की शिक्षा नीति में ऐसी क्या कमियां रह गई थीं जिन्हें दूर करने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लाने की आवश्यकता पड़ी।

साथ ही क्या यह नई राश्ट्रीय शिक्षा नीति उन उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम होगी जिसका स्वप्न महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानंद ने देखा था। यह शोध कार्य पूरे प्रदेश के लिए नवीन है इसलिए इसके प्राप्त सुझाव शिक्षा के विकास हेतु उपयोगी होंगे।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप का अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप नामांकन दर में सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप हो रहा है।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप नामांकन दर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना, (सुहावल), चित्रकूट (मझगवाँ), रामपुर बघेलान, नागौद, ऊचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर हैं। अतः जिला अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के विद्यालय इस अध्ययन सम्मिलित किए गए है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 साक्षात्कार विधि – शोध क्षेत्र सतना जिले में माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन की वर्तमान स्थिति की ज्ञात करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न प्राचार्य, अभिभावक, शिक्षक तथा छात्रों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.3 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

6.4 शोध उपकरण

सूचना या आंकड़े प्राप्त करने हेतु प्रयुक्त किये जाने वाले उपकरण –

1. साक्षात्कार अनुसूची
2. प्रश्नावली पत्रक
3. उपलब्धि परीक्षण पत्रक आदि।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित सतना जिले के सभी विकासखण्डों से 6–6 विद्यालय कुल 48 विद्यालयों, विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 80 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 2–2 अभिभावक कुल 80 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], खुल्लर, के.के. (1988)[4], यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006)[5], पाठक, सच्चिदानंद (2021)[6], मिश्र, गिरीश्वर (2020)[7]।

9. शोध क्षेत्र का परिचयः

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 7424 वर्ग कि.मी. है जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 1.78 प्रतिशत है। सतना मध्य रेल्वे के इलाहाबाद और कटनी जंक्शन के बीच एक प्रमुख रेल्वे स्टेशन एवं व्यापारिक, औद्योगिक नगर है। जिले में एक नगर निगम (सतना), एक नगरपालिका (मैहर) के अतिरिक्त 9 नगर पंचायते क्रमषः नागौद, अमरपाटन, रामपुर बघेलान, कोठी, जैतवारा, कोटर, विरसिंहपुर, उचेहरा एवं चित्रकूट हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह

आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. – 1 : "शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप हो रहा है।"

सारणी 1: शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप					
			हो रहा है		नही हो रहा है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	40	35	87.50	5	12.50	0	00
2.	अभिभावक	80	48	60.00	17	21.25	13	16.25
3.	शिक्षक	80	64	80.00	10	12.50	6	7.50
4.	छात्र	800	594	74.25	87	10.88	119	14.88
योग		1000	741	74.10	119	11.90	138	13.80
काई वर्ग (χ^2)			$\chi^2 = 752.36$					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंश 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

11. विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श में चयनित 05–05 प्राचार्यों, कुल मिलाकर 40 प्राचार्यों, 10–10 अभिभावक व शिक्षकों कुल 80 अभिभावक व शिक्षक और इसी प्रकार 100–100 छात्र–छात्राएँ कुल 800 छात्रों से माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के 87.50 प्रतिशत प्राचार्य, 60.00 प्रतिशत अभिभावक, 80.00 प्रतिशत शिक्षक व 74.25 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप हो रहा है।

न्यादर्श में चयनित कुल 1000 अभिमतदाताओं में से 74.10 प्रतिशत अभिमत है कि माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप हो रहा है, 11.90 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप नहीं हो रहा है, जबकि 13.80 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

इसी प्रकार तीनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 752.36 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से अधिक है। अतः उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप हो रहा है।

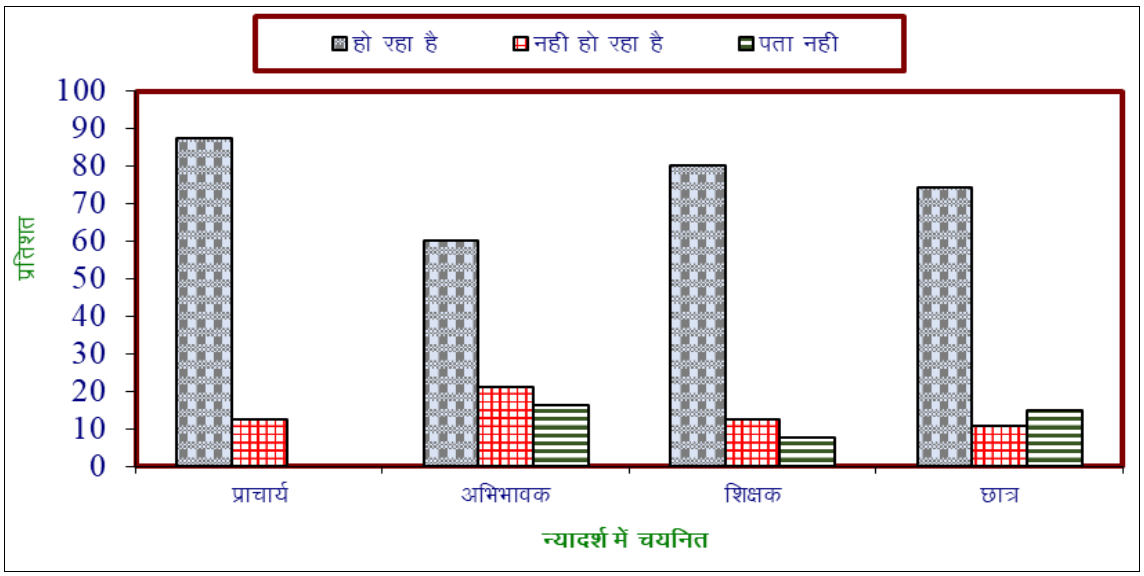

आरेख 1: शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन का अध्ययन

परिकल्पना क्र. – 2 : "शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप नामांकन दर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप नामांकन दर का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप नामांकन दर में सकारात्मक प्रभाव					
			पड़ रहा है		नही पड़ रहा है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	40	38	95.00	02	5.00	00	00
2.	अभिभावक	80	53	66.25	12	15.00	15	18.75
3.	शिक्षक	80	66	82.50	9	11.25	5	6.25
4.	छात्र	800	599	74.88	96	12.00	105	13.13
योग		1000	756	75.60	119	11.90	125	12.50
काई वर्ग (χ^2)			$\chi^2 = 809.16$					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंश 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

12. विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 2 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श में चयनित 05–05 प्राचार्यों, कुल मिलाकर 40 प्राचार्यों, 10–10 अभिभावक व शिक्षकों कुल 80 अभिभावक व शिक्षक और इसी प्रकार 100–100 छात्र–छात्राएँ कुल 800 छात्रों से माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप नामांकन दर से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के 95.00 प्रतिशत प्राचार्य, 66.25 प्रतिशत अभिभावक, 8250 प्रतिशत शिक्षक व 74.88 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप नामांकन दर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

न्यादर्श में चयनित कुल 1000 अभिमतदाताओं में से 75.60 प्रतिशत अभिमत है कि माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप हो रहा है, 11.90 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप नामांकन दर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, जबकि 12.50 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

इसी प्रकार तीनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 809.16 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से अधिक है। अतः उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप नामांकन दर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

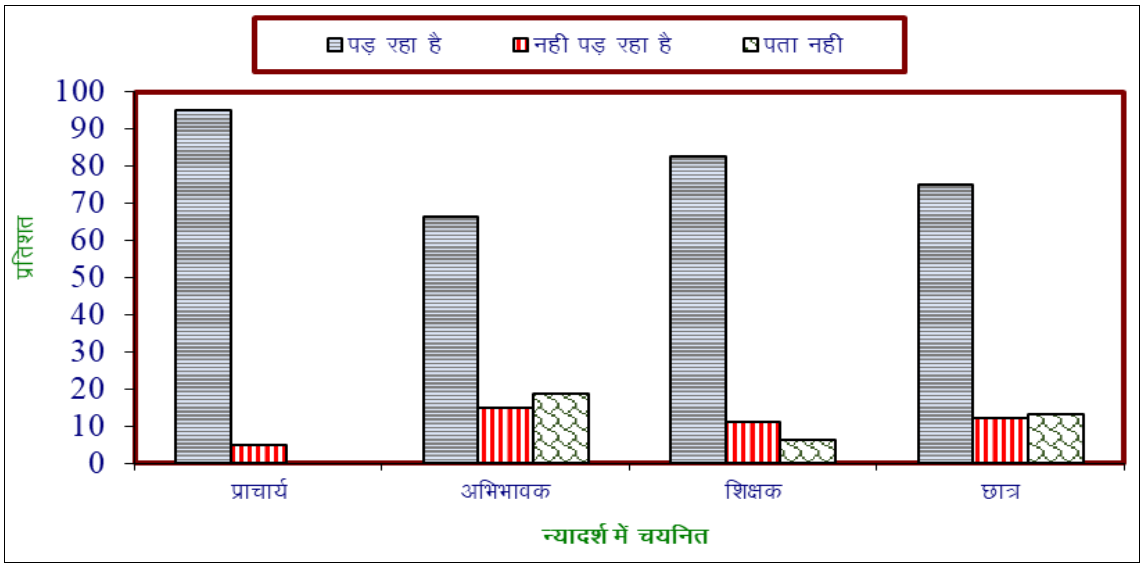

आरेख 2 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप नामांकन दर का अध्ययन

13. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि न्यादर्श में चयनित कुल 1000 अभिमतदाताओं में से 75. 60 प्रतिशत अभिमत है कि माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप हो रहा है, 11.90 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप नामांकन दर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, जबकि 12.50 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

न्यादर्श में चयनित कुल 1000 अभिमतदाताओं में से 75.60 प्रतिशत अभिमत है कि माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप हो रहा है, 11.90 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के परिणामस्वरूप

नामांकन दर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, जबकि 12.50 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

14.संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार. सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research. 2021;7(1):400-403.
3. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. खुल्लर, के.के. (1988) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय.
5. यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006) : वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधान में प्राचीन भारतीय शैक्षिक परम्पराओं की प्रासंगिकता। भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी. ई.आर.टी., वर्ष–24, अंक–3 पृष्ठ–75–84.
6. पाठक, सच्चिदानंद (2021) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के महत्वपूर्ण प्रावधानः एक अध्ययन, Multidisciplinary Academic Research. 2021;18(6): 216-220.
7. मिश्र, गिरीश्वर (2020) : नई शिक्षा नीति : संभावनाएँ और चुनौतियाँ, कंचनजंघा : पीयर रिव्यूड जर्नल, वर्ष 1 अंक 1, पेज 60–78.